जंग-ए-मैदान में अपना गरम लहू बहाकर हमारे देश में जारी नवजनवादी क्रांति को तेज करने वाले जन नायक-नायिकाओं को शत्-शत् लाल सलाम!

28 जुलाई से 3 अगस्त 2017 तक मनाये जाने वाले शहादत सप्ताह के मौके पर शहीदों को याद करें, उनसे प्रेरणा लें व उनके अधूरे सपने को पूरा करने का संकल्प लें!

झारखंड में धार्मिक अल्पसंख्यकों पर हो रहे सत्ता संरक्षित भगवा हमले, गिरिडीह जिला के पारसनाथ में एक आदिवासी डोली मजदूर मोतीलाल बास्के की सीआरपीएफ द्वारा फर्जी मुठभेड़ में की गई हत्या सहित विभिन्न इलाकों में की गई फर्जी मुठभेड़ में हत्या, क्रांतिकारी आंदोलन के इलाके की जनता पर हो रहे पुलिसिया दमन-उत्पीड़न व बिहार-झारखंड के कई गरीब किसानों को दी गई फांसी की सजा के खिलाफ 3 अगस्त के एक दिवसीय बिहार-झारखंड बंद को सफल करें!

साथियों,

हमारे भारत देश में जारी नवजनवादी क्रांति, जिसका लक्ष्य है शोषण-उत्पीड़न से मुक्त समाज की स्थापना, को सफल बनाने के लिए जारी जनयुद्ध में वर्ष 1967 के महान नक्सलबाड़ी विद्रोह से लेकर आज तक हमारी प्रिय मातृभूमि के लगभग पन्द्रह-सोलह हजार वीर बेटे-बेटियों ने शहादतें दी है, जिसमें 21 सितंबर 2004 को एक नई एकीकृत पार्टी के रूप में भाकपा (माओवादी) के आविर्भाव के बाद से आज तक तीन हजार से भी अधिक कामरेडों की शहादतें भी शामिल है। पिछले 28 जुलाई 2016 से आज तक यानी विगत एक वर्ष में भी हमारी पार्टी, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे के सैकड़ों कामरेडों ने शहादत दिये हैं, जिसमें हमारी पार्टी के वरिष्ठ नेता व पोलित ब्यूरो सदस्य कामरेड नारायण सन्याल (ये 17 अप्रैल 2017 को कैंसर बिमारी से शहीद हो गये) व केन्द्रीय कमेटी सदस्य कामरेड कुप्पु देवराज उर्फ योगेश (इनको 24 नवंबर 2016 को केरल के नीलाम्बुर इलाके में बीमार अवस्था में पकड़ कर हत्यारे पुलिस द्वारा फर्जी मुठभेड़ में मार दिया गया) से लेकर सैक, रीजन, जोनल, सबजोनल, एरिया कमेटी के कैडर, पीएलजीए व संयुक्त मोर्चे के कार्यकर्त्ता शामिल हैं। इसी कड़ी में बीजे सैक अंतर्गत 15-20 कामरेड शासक वर्ग द्वारा जारी बर्बर युद्ध अभियान 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' के खिलाफ लड़ते हुए जंग-ए-मैदान में शहीद हुए हैं, जिसमें बीजे सैक के महत्वपूर्ण सदस्य कामरेड आशीष की 11 सितम्बर 2016 को हुई शहादत भी शामिल है।

शहादतों की उपरोक्त उज्ज्वल मिसालें इस बात को साबित करती है कि हमारी पार्टी की शीर्ष कमेटी के कामरेडों ने भी संकीर्ण निजी स्वार्थ के लिए नहीं बल्कि आम जनता के स्वार्थ में और उनकी मुक्ति के लिए जारी जनयुद्ध के मैदान में अग्रिम पंक्ति में खड़े होकर अपनी जान की कुर्बानी देने में किसी भी तरह की हिचकिचाहट नहीं दिखाई व प्रिय मातृभूमि को निर्मम आर्थिक शोषण व बर्बर राजनीतिक उत्पीड़न से मुक्त करने के महान काम में अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। इन जांबाज जन योद्धाओं व साहसिक जन नेत्रियों को भाकपा (माओवादी) की बिहार-झारखंड स्पेशल एरिया कमेटी नतमस्तक होकर श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

साथियों, केन्द्र की सत्ता संभाले चरम ब्राह्मणवादी हिन्दुत्व फासीवादी भाजपा के नरेन्द्र मोदी सरकार के तीन साल से भी अधिक हो गये हैं। इन तीन सालों में इस सरकार ने देशी-विदेशी पूंजीपतियों के लिये देश की प्रकृतिक सम्पदाओं व आम जनता को लूटने की खुली छूट दे रखी है और दुनिया की जनता का दुश्मन नम्बर वन अमेरिकी साम्राज्यवाद के सामने देश की सम्प्रभुता को गिरवी रख दिया है। इस सरकार ने एक तरफ हमारे देश के मजदूर-किसानों, छात्र-युवाओं, मेहनतकश महिलाओं, उत्पीड़ित राष्ट्रों, उत्पीड़ित सामाजिक जनसमुदायों, धार्मिक अल्पसंख्यकों, दलितों, आदिवासियों आदि के मुलभूत अधिकारों पर हमला बोल दिया है, वहीं दूसरी तरफ अपने मातृ संगठन राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ (आरएसएस) व उसके लगुवे-भगुवे विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, दुर्गा वाहिनी, गौ रक्षक संघ आदि को गौ रक्षा, जाति-धर्म, खान-पान आदि के नाम पर दलित-आदिवासियों व धार्मिक अल्पसंख्यकों (खासकर मुस्लिमों व इसाइयों) की हत्या करने का लाइसेंस दे दिया गया है। कहा जा सकता है कि आज पूरा देश फासीवाद की कैद में छटपटा रहा है।

केन्द्र सरकार की तर्ज पर ही आदिवासी बहुल राज्य झारखंड में भी आदिवासियों, दलितों व धार्मिक अल्पसंख्यकों (खासकर मुस्लिमों व इसाइयों) पर चरम ब्राह्मणवादी हिन्दुत्व फासीवादी भाजपा की रघुवर दास सरकार ने भी हमला

बोल दिया है। एक तरफ, सीएनटी व एसपीटी एक्ट में संशोधन के प्रस्ताव व नई स्थानीयता की नीति के जरिये आदिवासियों की अस्मिता पर ही खुले तौर पर हमला बोल दिया गया है, तो वहीं दूसरी तरफ अपने मातृ संगठन व उसके लगुवे-भगुवे को पूरे राज्य में धार्मिक अल्पसंख्यकों पर हमले की खुली छूट दे दी गई है। जिसका उदाहरण है- लातेहार के एक मुस्लिम पशु व्यापारी की पीट-पीट कर हत्या करना, 27 जून को गिरिडीह जिला के देवरी में उस्मान अंसारी पर गौ हत्या का आरोप लगाकर उसके पूरे परिवार समेत उसकी पिटाई करना व घर जलाना एवं 29 जून को रामगढ़ में अलीमुद्दीन अंसारी को गौ मांस का व्यापार करने के आरोप में पीट-पीटकर हत्या करना आदि। बच्चा चोर का अफवाह फैलाकर भी जमशेदपुर, सरायकेला-खरसांवा व बोकारो जिला में कई लोगों की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। इन सारी घटनाओं में आरएसएस व उसके अनुषांगिक संगठनों की संलिप्तता से स्पष्ट हो गया कि इन हमले के पीछे सरकार का ही हाथ है और हत्यारों को सत्ता का संरक्षण प्राप्त है।

बिहार की महागठबंधन की नीतीश कुमार की सरकार ने भी सामंतों-जमींदारों व पूंजीपतियों के पक्ष में खड़ा होकर गरीब किसानों पर हमला बोल दिया है। जहां एक तरफ, सामंती गुंडा गिरोह रणवीर सेना के द्वारा किये गये दसियों जनसंहारों में मारे गये सैकड़ों दलितों, पिछड़ों व अल्पसंख्यकों के हत्यारों को बिहार के अन्यायी उच्च न्यायालय के जरिये रिहा कर दिया गया, वहीं दूसरी तरफ बारा, सेनारी व मुंगेर जिला में जनाक्रोश का शिकार हुये सामंती गुंडों व जुल्मी पुलिसकर्मियों की हत्या के आरोप में कई गरीब निर्दोष किसानों को फांसी की सजा सुनायी गयी है। झारखंड के हजारीबाग जिला के एक गरीब किसान को भी झूठे आरोप लगाकर फांसी की सजा सुनायी गई है।

साथियों,

वर्त्तमान में मिशन-2017 के नाम पर केन्द्र व राज्य सरकारें प्रतिक्रांतिकारी योजना बनाकर बर्बर युद्ध अभियान 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' के तीसरे चरण के तहत दण्डकारण्य और बिहार-झारखंड के क्रांतिकारी आंदोलन पर हमले तेज कर दिये हैं। काम्बिंग ऑपरेशनों पर निकले हत्यारे व जुल्मी अर्द्ध-सैनिक बलों द्वारा आम जनता के साथ मार-पीट व महिलाओं के साथ छेड़खानी की घटना लगातार बढ़ रही है। बिहार-झारखंड के क्रांतिकारी संघर्ष के प्रत्येक इलाके में नित्य-प्रतिदिन अर्द्ध-सैनिक बलों द्वारा आम जनता के घरों में लूट-पाट करना, घरों को जलाना, घरों को तोड़ना, मुर्गा, मुर्गी, बकरी आदि मारकर खा जाना, युवाओं के साथ मार-पीट करना, फर्जी मुठभेड़ के जरिये ग्रामीणों को गोली मारकर हत्या करना, महिलाओं के साथ बलात्कार करना आदि की घटनाएं लगातार बढ़ती जा रही है। इसी कड़ी में 9 जून 2017 को गिरिडीह जिला के पारसनाथ की तराई में स्थित ढोलकट्टा के पास एक डोली मजदूर मोतीलाल बास्के को पकड़कर सीआरपीएफ कोबरा ने फर्जी मुठभेड़ में गोली मार कर हत्या कर दी, जिसके खिलाफ गिरिडीह में विशाल जनांदोलन जारी है।

उपरोक्त कठिन परिस्थितियों के बीच केन्द्र व राज्य सरकारों की घोर जनविरोधी नीतियों व कार्यवाहियों के खिलाफ आम जनता के सही सवालों पर लड़ते हुए ही हमारी पार्टी 28 जुलाई से 3 अगस्त 2017 तक जनता की सच्ची आजादी के लिए शहीद हुये साथियों की याद में शहादत सप्ताह मना रही है और नवजनवादी क्रांति को और भी तेज करने का संकल्प ले रही है।

आवें, झारखंड में धार्मिक अल्पसंख्यकों पर हो रहे सत्ता संरक्षित भगवा हमले, गिरिडीह जिला के पारसनाथ में एक आदिवासी डोली मजदूर मोतीलाल बास्के की सीआरपीएफ द्वारा फर्जी मुठभेड़ में की गई हत्या सहित विभिन्न इलाकों में की गई फर्जी मुठभेड़ में हत्या, क्रांतिकारी आंदोलन के इलाके की जनता पर हो रहे पुलिसिया दमन-उत्पीड़न व बिहार-झारखंड के कई गरीब किसानों को दी गई फांसी की सजा के खिलाफ 3 अगस्त 2017 के एक दिवसीय बिहार-झारखंड बंद को सफल करें!

आवें, भारत में नवजनवादी क्रांति की राह में शहीद हुये तमाम शहीदों की याद में 28 जुलाई से 3 अगस्त 2017 तक शहादत दिवस के अवसर पर घर-घर, गांव-गांव, इलाके-इलाके में स्मृति सभाओं को आयोजन करें, शहीद वेदी का निर्माण करें व उनके अधूरे सपने को पूरा करने का संकल्प लें।

10 जुलाई, 2017

क्रांतिकारी अभिवादन के साथ,
बिहार-झारखंड स्पेशल एरिया कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)